एक बेहतर जीवन का निर्माण

अकबर की कहानी

प्रेरणा PRERANA

PRERANA ATC Anti-Trafficking Center

17 वर्षीय अकबर (बदला हुआ नाम) अपने पांच भाई-बहनों (3 बहन, 2 भाई) में सबसे बड़ा है. कक्षा 10 के विद्यार्थी के रूप में 2019 अकबर के लिए एक बेहद ही महत्वपूर्ण वर्ष था. जहां अकबर एक तरफ अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर रहा था, वहीं वह अपने व अपने परिवार के लिए कुछ सपने भी बुन रहा था. यह कहानी अकबर की है, जो मुंबई के कुख्यात रेडलाइट एरिया कमाठीपुरा का रहने वाला है. यह उसके रेडलाइट एरिया के चुनौती पूर्ण जीवन से निकलकर एक आत्म-सम्मान, अधिकार, व उत्तम जीवन पाने के संघर्ष की यात्रा को दर्शाने वाली कहानी है.

एक मां के कठिन हालात

ज्योतिमा (बदला हुआ नाम) एक गरीब बंटाईदार (साझेदारी में खेती करने वाले) परिवार से आती है, जिसका गांव पश्चिम बंगाल के नदिया जिले में आता है. 1988 में जब ज्योतिमा 11 वर्ष की थी, तब उसका चचेरा भाई उसे अच्छी नौकरी दिलाने का प्रलोभन देकर सोनागाची ले आया था. सोनागाजी पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता का एक रेडलाइट एरिया है. वहां पहुंचने के बाद ज्योतिमा को एहसास हुआ कि यह उसके चचेरे भाई की पुरानी पारिवारिक दुश्मनी का बदला लेने की एक साज़िश थी. इसके बाद वर्ष 2000 में ज्योतिमा को एक 45 वर्षीय नियमित ग्राहक सलीम से शादी करने के लिए बेचा गया.

शोषण व हिंसा के साये में जीवन

अगले 5 वर्ष यानी 2000-2005 तक ज्योतिमा सोनागाची में अपने आदमी सलीम के दबाव में रही, जो उसे नियमित रूप से मारता-पीटता था और उससे दुर्व्यवहार व उसका शोषण करता था. वर्ष 2001 में ज्योतिमा ने अपनी पहली संतान अकबर और 2004 में दूसरी संतान रेखा (दोनों बदले हुए नाम) को जन्म दिया. अपने आदमी द्वारा किए जा रहे शोषण से तंग होकर ज्योतिमा 2005 में उसके चंगुल से भाग निकली.

उस वक्त ज्योतिमा की उम्र महज 18 वर्ष थी.अपने आदमी के चंगुल से भागकर ज्योतिमा अपने बेटे अकबर, जो उस वक्त 4 वर्ष का था, और बेटी रेखा के साथ अपने गांव के लिए रवाना हुई.

अपने गांव पहुंचकर ज्योतिमा खेती-किसानी के कार्यों में वापस लगी और अपने परिवार वालों की मदद से बच्चों का भरण पोषण करने लगी. ज्योतिमा का यह शांतिमय जीवन बस एक माह ही चल पाया, जिसके बाद उसके एक दूसरे चचेरे भाई को यह भनक लगी कि वह किस धंधे में थी. उसने ज्योतिमा को एक फ़ैक्टरी में काम दिलाने का प्रलोभन दिया और उसकी नीयत से अनजान ज्योतिमा ने इसके लिए अपनी सहमति दे दी.

उसका चचेरा भाई उसे अकबर व रेखा के साथ काम दिलाने के लिए फैक्टरी के बदले कमाठीपुरा की गली नंबर 11 ले आया और उन्हें एक दलाल को सौंप दिया. कमाठीपुरा में उस दलाल ने ज्योतिमा को एक पिंजरे जैसे वेश्याघर में रखा और उसे तब तक प्रताड़ित किया जब तक उसने ग्राहकों के साथ लैंगिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए हामी नहीं भरी.

प्रेरणा का हस्तक्षेप

वर्ष 2005 में एक आउटरीच विजिट के दौरान प्रेरणा के सदस्यों ने सड़क पर अकबर को मटरगश्ती करते हुए देखा, ज्योतिमा उस दौरान ग्राहकों को लुभाने का प्रयास कर रही थी. हमारी टुकड़ी के सदस्यों ने मां (ज्योतिमा) को नाइट केयर सेंटर (एनसीसी) व उसकी सेवाओं के बारे में बताया, जिसमें सोने के लिए एक सुरक्षित स्थान, मनोरंजन समेत कई अन्य सुविधाएं मौजूद हैं. कई अन्य माताओं ने ज्योतिमा को कमाठीपुरा में प्रेरणा के बालवाड़ी (प्री-स्कूल) के बारे में जानकारी दी, जिसके बाद वह अकबर को भर्ती कराने के लिए राज़ी हुई.

एनसीसी में अकबर के सफर की शुरुआत

4 वर्षीय अकबर को 2005 में प्रेरणा के कमाठीपुरा एनसीसी में भर्ती कराया गया. दाखिले की प्रक्रिया में ब्लड काउंट, एक्स-रे, शिशु रोग विशेषज्ञ का परामर्श आदि जैसे चिकित्सकीय परीक्षण शामिल थे. यह सभी परीक्षण ज्योतिमा की सहमति के साथ कराए गए. एनसीसी में दाखिले के दौरान बालक का चिकित्सकीय परीक्षण यह सुनिश्चित करने के लिए कराया जाता है कि अगर बालक कोई बीमारी से जूझ रहा हो तो उसका इलाज समय पर कराया जा सके.उस वक्त अकबर की छोटी बहन राखी को दाखिला नहीं दिया जा सका क्योंकि वह महज एक वर्ष की थी और अपनी मां से अलग रखे जाने के लिए काफी छोटी थी. एनसीसी में अकबर ने गाना गाने से लेकर कविता लिखना, चित्रकारी करना, ओरिगेमी (कागज को मोड़कर कलाकृतियां बनाना) जैसी गतिविधियों में भाग लिया. ज्योतिमा ने इस बात पर बराबर ध्यान दिया कि वह नियमित रूप से प्रेरणा द्वारा आयोजित की जाने वाली मदर्स मीटिंग (माताओं की बैठक) में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है.

एक मां की चिंता

अकबर ने जनवरी 2005 से जनवरी 2007 तक नियमित रूप से प्रेरणा के एनसीसी में उपस्थित रहा. जून, 2007 में ज्योतिमा ने अपने तीसरी संतान मोहिना (बदला हुआ नाम) को जन्म दिया. इस दौरान सामाजिक कार्यकर्ताओं ने ज्योतिमा के साथ परिवार नियोजन और उसकी सेहत के बारे में चर्चा की. लेकिन यह पहला मौका नहीं था जब सामाजिक कार्यकर्ताओं ने ज्योतिमा से परिवार नियोजन के संबंध में बातचीत की थी. ज्योतिमा इस मुद्दे पर चर्चा करने से भी घबरा रही थी और वह इस मुद्दे पर आगे चर्चा नहीं करना चाहती थी. उसने आगे बताया कि उसका आदमी इस मुद्दे पर चर्चा करना पसंद नहीं करता है, उसके आदमी की धारणा यह थी कि नसबंदी कराने के बाद वह अपने ग्राहकों के लिए कम प्रभावी हो जाएगी. ज्योतिमा ने गर्भधारण करने पर उसका नियंत्रण होने पर बेहद बेबसी जताई. ज्योतिमा इस स्थिति में नहीं थी कि वह 3 बालकों को एक साथ संभाल सके, तो उसने अकबर को गांव भेजने का फैसला किया और उसे गांव भेज दिया. गांव में अकबर की देखभाल उसके नाना-नानी कर रहे थे.

प्रेरणा के सदस्य नियमित रूप से उसकी हाल खबर/उसका हाल चाल पूछ ले रहे थे. ज्योतिमा से बातचीत करने पर टीम को ज्ञात हुआ कि गांव में अकबर का दाखिला किसी स्कूल में नहीं हुआ है. इसके बाद प्रेरणा के सदस्यों ने ज्योतिमा को पढ़ाई व स्कूल में दाखिला कराने की महत्वता समझाई. साथ ही स्थानीय एनजीओ की पहचान करके बालक के संरक्षण व विकास के लिए जरूरी सहायता दिलाने के लिए संपर्क साधने में मदद करने की पेशकश की. 2008 में जब अकबर 6 साल का हुआ तो उसका दाखिला बांग्ला माध्यम के स्कूल में कराया गया. अकबर के मुंबई में न होने के बावजूद भी प्रेरणा ने ज्योतिमा के जरिए बालकों का फॉलो-अप जारी रखा. साथ ही साथ यह भी सुनिश्चित किया कि उन्हें किसी अन्य सहायता की आवश्यकता तो नहीं है.

एनसीसी में वापसी

अकबर ने 2012 तक अपने गांव में ही पढ़ाई की, उस वक्त वह 11 वर्ष का था और तीसरी कक्षा की पढ़ाई पूरी कर चुका था. सितंबर 2012 में ज्योतिमा ने अकबर को वापस मुंबई बुला लिया था क्योंकि बिगड़ती सेहत के कारण ज्योतिमा की मां अकबर की देखभाल करने में असमर्थ थी. ज्योतिमा और अकबर से सहमति लेने के बाद प्रेरणा ने कमाठीपुरा म्युनिसिपल स्कूल में अकबर का दाखिला चौथी कक्षा में करा दिया. इसके साथ ही अकबर ने प्रेरणा में एजुकेशन सपोर्ट प्रोग्राम (ईएसपी) के तहत शाम को आयोजित होने वाली क्लासेस भी लेना शुरू किया. प्रेरणा में पुन: दाखिला लेने के बाद नियमानुसार एक स्थानीय सरकारी अस्पताल से अकबर का चिकित्सकीय परीक्षण कराया गया. परीक्षण की सभी रिपोर्ट्स सामान्य निकली. प्रेरणा के केंद्र पर आयोजित होने वाली अनेक गतिविधियों में अकबर भाग लेने लगा और माहौल में धीरे-धीरे ढलने लगा. इस दौरान उसने दिया बनाना, मोमबत्ती बनाना, विज्ञान प्रदर्शनी आदि जैसी गतिविधियों में अपनी रुचि दिखाई. इसके साथ ही अकबर सॉन्गबाउंड द्वारा आयोजित गायकी सत्र से जुड़ा और प्रेरणा पीयर ग्रुप द्वारा एचआईवी/एड्स व तंबाकू के इस्तेमाल से होने वाले नुकसान को लेकर लोगों को जागरूक करने के अभियान से भी उत्सुकता से जुड़ा. साथ ही साथ वह प्रेरणा द्वारा आयोजित कराए जाने वाले डे टू डे समर कैंप, खेल कूद गतिविधियों व लाइफ स्किल एजुकेशन सत्र का भी हिस्सा बना.

परिवार नियोजन का आभाव

जनवरी 2013 में ज्योतिमा ने अपने चौथी संतान नूर अरशद (बदला हुआ नाम) को जन्म दिया. उसके अनुसार, उसका आदमी इस बालक का असली पिता था. नूर अरशद के जन्म के 4 महीने बाद ही ज्योतिमा फिर से गर्भवती हो गई और दिसंबर 2013 में ज्योतिमा ने अपनी सबसे छोटी बेटी को जन्म दिया. इसके बाद प्रेरणा के केसवर्कर्स द्वारा एकबार फिर से ज्योतिमा से परिवार नियोजन को लेकर चर्चा की. लेकिन इस बार ज्योतिमा परिवार नियोजन के फैसले को लेकर दृढ़ निश्चय कर चुकी थी और यह जानते हुए भी, कि इस फैसले के बाद उसके साथ उसके आदमी द्वारा हिंसा की जा सकती है, वह परिवार नियोजन का ऑपरेशन कराने का फैसला लेती है. उसके अनुरोध के अनुसार, उसका ऑपरेशन कड़ी गोपनीयता के साथ कराया गया.

बाल गृह को हस्तांतरण

वर्ष 2013 के मध्य तक, ज्योतिमा 12 वर्षीय अकबर को बस्ती (रेड लाइट एरिया) में नहीं रखना चाहती थी और चाहती थी कि उसे रेड लाइट एरिया से बाहर कहीं सुरक्षित स्थान पर रखा जा सके. अकबर को छोड़कर अन्य तीन छोटे बालकों के साथ 6 माह की गर्भवती ज्योतिमा की स्थिति काफी अस्थिर थी. इसके साथ ही उसकी पूरी कमाई उसके आदमी के नियंत्रण में थी. उसकी शारीरिक हालत नाज़ुक होने के बावजूद भी उसे रोड पर ग्राहकों को लुभाने के लिए ज़बरदस्ती भेजा जाता था. इन्ही कारणों से ज्योतिमा अपने चारों बालकों को बाल गृह भेजने पर विचार कर रही थी, बाल गृह को कम्यूनिटी में 'बोर्डिंग स्कूल' भी कहते हैं. उसने सलाह लेने के लिए प्रेरणा व सैल्वेशन आर्मी (जो बाल गृह का संचालन करते हैं) से संपर्क किया.

ज्योतिमा की इच्छा के अनुसार, प्रेरणा ने बालक को एक सही बाल गृह में भेजने के लिए अपनी ओर से प्रयास शुरू किए. टीम ने मुंबई में जगह की उपलब्धता जानने के लिए अंजुमन इस्लाम चैरिटीज से संपर्क किया. इसी बीच, सैल्वेशन आर्मी के सदस्यों ने ज्योतिमा को अंबरनाथ में एक एनजीओ में जगह की उपलब्धता के बारे में सूचित किया और अगस्त 2013 में अकबर को वहां भेजने में मदद की.

नोट: प्रेरणा के सामाजिक कार्यकर्ताओं या टीम को यह बात निश्चित तौर पर नहीं पता है कि बालक को बाल कल्याण समिति (सीडब्ल्यूसी) के आदेश पर बाल गृह में भर्ती किया गया था या नहीं.

अकबर का चिकित्सकीय परीक्षण जुलाई 2013 के अंत में किया गया था, जिसमें वह टुबर्क्यलोसिस (टीबी) से बाधित निकला. जैसा कि अकबर को अंबरनाथ के एनजीओ में रखा जा चुका था, तो प्रेरणा ने चिकित्सा संबंधी दस्तावेज सैल्वेशन आर्मी को सौंप दिए थे और उनसे आग्रह किया कि यह दस्तावेज संबंधित एनजीओ को सौंप दिए जाएं. अंबरनाथ स्थित एनजीओ ने डॉक्टरों द्वारा प्रस्तावित इलाज को आगे जारी नहीं रखा. सितंबर, 2013 में ज्योतिमा ने प्रेरणा को बताया कि अंबरनाथ स्थित बालगृह अकबर के लिए सही नहीं है, क्योंकि वहां मूलभूत सुविधाओं का अभाव है, जिसके कारण अकबर महीने भर से डॉट्स (डायरेक्ट आब्जर्व्ड थेरेपी-शॉर्ट कोर्स) का इलाज नहीं ले पाया. ज्योतिमा ने आगे कहा कि वह अकबर को क्षेत्र में वापस ला रही है और प्रेरणा से आग्रह किया कि प्रेरणा एनसीसी में उसे फिर से भर्ती कर लिया जाए. वह चाहती थी कि उसका बालक सुरक्षित रहे व रेड लाइट एरिया के नकारात्मक प्रभावों से दूर रहे.

प्रेरणा में चिकित्सकीय आंकलन व आगे की कार्यवाही

जब भी प्रेरणा के एनसीसी में किसी बालक को भर्ती किया जाता है, तो स्किन टेस्ट (मोंटेक्स टेस्ट), ब्लड काउंट का परीक्षण, एक्स-रे, थूक की जाँच आदि जैसी बुनियादी जांच अनिवार्य रूप से कराई जाती है. यह टेस्ट बालकों में टीबी की जांच के लिए किए जाते हैं, क्योंकि मुंबई में यह बीमारी व्यापक रूप से मौजूद है. प्रेरणा में हम सामान्य चिकित्सकीय परीक्षण के साथ-साथ पेट दर्द, चर्म रोग, मिर्गी, दंत चिकित्सा व नेत्र चिकित्सा आदि जैसी विशेष बीमारियों की भी जांच कराते हैं. इसके साथ ही हर 15 दिन में एक शिशु रोग विशेषज्ञ केंद्र पर आता है. प्रेरणा के क्षेत्रीय केंद्रों में संस्था द्वारा नियुक्त एक काउंसलर भी है.

पुनर्वासन का अंतिम उपाय है दाखिला

एक आश्रय केंद्र को बालक की देखभाल व सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ बालक के सुधार व पुनर्वासन सुविधा को भी ध्यान में रखना चाहिए. हालांकि, यदि बालक को उचित देखभाल और सुरक्षा के बजाय कुपोषण का सामना करना पड़ता है, तो पुनर्वास एक दूरस्थ संभावना है. जब भी किसी बालक को देखभाल व समर्थन सुविधाओं का न्यूनतम स्तर मुहैया कराने से मना किया जाता है, तो उसे निरादर की भावना का सामना करना पड़ता है. यह निरादर शारीरिक दंड, मौखिक दुर्व्यवहार, भोजन व कपड़ों की कमी जैसे कई रूपों में हो सकता है. यह निरादर तब भी जारी रहता है, जब किसी बालक को शिक्षा व व्यावसायिक प्रशिक्षण लेने से रोका जाता है. बालक का भरोसा तोड़कर उसके द्वारा साझा की गई गोपनीय जानकारी साझा करना, उसकी मर्जी के बगैर या उस पर दबाव बनाकर किसी गतिविधि में शामिल करना या कोई गतिविधि कराना, दुर्व्यवहार, गलत परामर्श व चिकित्सा भी बालक का निरादर है और वह आश्रय केंद्र द्वारा दिए जाने वाले अधिकारों के विरुद्ध है.

प्रेरणा में हम यह सुनिश्चित करते हैं कि जिस बालक को देखभाल व संरक्षण की जरूरत है, उसे बाल कल्याण समिति के आदेश से चाइल्ड केयर इंस्टीट्यूशन (रिहायशी देखभाल केंद्र) में रखा जाए. जुवेनाइल जस्टिस (बालकों की देखभाल व संरक्षण) एक्ट, 2015 के सेक्शन 27 से सेक्शन 30 तक यह सुनिश्चित करते हैं कि बाल कल्याण समिति देखभाल व संरक्षण के जरूरतमंद बालकों के लिए बनाए गए रिहायशी केंद्र के निरीक्षण के लिए हर माह कम से कम दो दौरे करे. साथ ही यह भी सुनिश्चित करे कि रिहायशी केंद्र कानून के अनुसार देखभाल, सुरक्षा व संरक्षण के मापदंडों का पालन कर रहे हैं.

पुनर्वासन के प्रयास

27 सितंबर, 2013 को अकबर वापस मुंबई आ गया और कमाठीपुरा स्थित प्रेरणा के एनसीसी में फिर से आने लगा. प्रेरणा ने अकबर के चिकित्सा संबंधी मूल दस्तावेज एनजीओ से प्राप्त करने की कोशिश की, लेकिन एनजीओ द्वारा उपलब्ध नहीं कराए गए.

इसके बाद प्रेरणा द्वारा अकबर को स्थानीय डॉट्स केंद्र आरएनटीसीपी (रिवाइज्ड नेशनल ट्यूबरक्लोसिस कंट्रोल प्रोग्राम सेंटर) ले जाया गया, जहां संबंधित चिकित्सा अधिकारी से अकबर के चिकित्सा दस्तावेजों की प्रतियों के आधार पर इलाज शुरू करने का आग्रह किया गया. इसी बीच ज्योतिमा एनजीओ से चिकित्सा के मूल दस्तावेज प्राप्त करने में सफल रही. टीबी से जुड़ी चिकित्सा की जरूरत व उसके पालन को लेकर प्रेरणा द्वारा ज्योतिमा को भी जानकारी दी गई. अकबर ने अपना डॉट्स इलाज पूरा किया और जल्द ही स्वस्थ्य हो गया. 12 वर्षीय अकबर का दाखिला एक बार फिर से स्कूल में कराया गया. इस बार उसका दाखिला हिंदी माध्यम के विद्यालय में कक्षा-5 में कराया गया. ज्योतिमा ने बालक के संपूर्ण विकास के लिए अपनी तरफ से पूरे प्रयास किए और उसने स्कूल में होने वाली बैठकों में नियमित रूप से उपस्तिथि दर्ज कराई. साथ ही साथ अकबर की प्रगति से संबंधित जानकारी नियमित आधार पर हासिल की.

पुनर्वासन

अगस्त, 2014 में 13 वर्षीय अकबर छठी कक्षा में था, उस वक्त प्रेरणा के सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अंधेरी स्थित एसबीटी से संपर्क किया और सीडब्ल्यूसी के आदेश के साथ उसे एसबीटी के ओपन शेल्टर में भेजा गया. अकबर की प्रगति जांचने के लिए किए जाने वाले दौरे के दौरान सामाजिक कार्यकर्ताओं ने पाया कि अकबर वहीं के माहौल में अच्छी तरह से घुल-मिल गया है और एसबीटी में होने वाली गतिविधियों विशेषकर डांस में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है.

मां और बेटे का रिश्ता

अक्टूबर 2015 में जब अकबर 14 वर्ष का था, तो वह बीमार पड़ गया, जिस कारण उसकी मां को उसे कुछ दिनों के लिए वापस वेश्यालय लाना पड़ा. अकबर को पता चला कि उसकी वापसी से पहले ज्योतिमा का आदमी उस वक्त दो साल के नूर अरशद (अकबर का छोटा भाई) को लेकर भाग गया जब ज्योतिमा रास्ते में ग्राहकों को लुभाने में व्यस्त थी. मां ने प्रेरणा से संपर्क साधा, जहां उसे स्थानीय पुलिस को तुरंत सूचित करने के लिए कहा गया. ज्योतिमा ने पुलिस थाने में जाकर शिकायत दर्ज कराई, जिसके 4 दिन बाद पुलिस ने उसके आदमी को बालक के साथ खोज निकाला. दोनों की बरामदगी के बाद वह प्रेरणा के पास आई और कहा कि वह उस आदमी द्वारा किए जा रहे दुर्व्यवहार को और बर्दाश्त नहीं कर सकती है, और वह उसके साथ रहना भी नहीं चाहती है. उसने आगे कहा कि वह मौका मिलते ही उस कैद से भाग निकलेगी.
अकबर ने अपनी मां को समझाया और कहा कि वह पढ़ाई खत्म करते ही कमाना शुरू करेगा और सुनिश्चित करेगा की उसका परिवार रेड लाइट एरिया से बाहर निकल जाए. अकबर के मन में अभी भी यह डर है कि वह शख्स (उसकी मां का आदमी) नूर अरशद को लेकर भागने का प्रयास फिर से कर सकता है.

चुनौतियों के बाद भी नहीं रुके कदम

एसबीटी से जुड़ने के बाद से अकबर नियमित रूप से स्कूल जा रहा है. अपनी छुट्टियों के दौरान वह प्रेरणा के एनसीसी में रुका और 2016 में आयोजित हुए डे टू डे समर कैम्प में भाग लिया. जून 2017 में अकबर को एसबीटी के बोरीवली, मुंबई स्थित दूसरे सेंटर पर भेज दिया गया. हालांकि, ज्योतिमा इस बात को लेकर चिंतित थी कि अकबर नई जगह में कैसे खुद को संभालेगा, तो उसकी चिंता को देखते हुए प्रेरणा के सामाजिक कार्यकर्ताओं ने उसके लिए केंद्र के दौरे का इंतजाम कराया.
वर्ष 2018 में अकबर को एक निजी स्कूल में दाखिला दिलाया गया और उसने 2019 में दसवीं कक्षा की परीक्षा दी.

अपनी निजी जिंदगी की चुनौतियों व व्याकुलता के बावजूद भी उसने अपना ध्यान पढ़ाई पर ही केंद्रित रखा. अपने परिवार के साथ इस समाज में आत्मसम्मान से जीने का सपना उसके मन में पल रहा है और उसे अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित कर रहा है.
प्रेरणा अपने प्रोग्राम के जरिए व्यक्तिगत विकास में नहीं सामाजिक विकास में भरोसा रखता है. प्रेरणा उन सभी स्थानीय व अंतरराष्ट्रीय कॉरपोरेशन के साथ प्रभावी व सम्पन्न साझेदारी रखता है, जो रेड लाइट एरिया के बालकों को देह व्यापार में होने वाले शोषण से निकालकर बेहतर जिंदगी देने का लक्ष्य रखते हैं. प्रेरणा ने हमेशा सहयोगी कार्यक्रमों व स्वयंसेवा से इन बालकों का समर्थन किया है.

एक जिंदगी व सपने का निर्माण

अकबर के लिए उसका परिवार सबसे पहले आता है. मां, तीन बहनों व एक छोटे भाई से बने इस परिवार को अकबर एक अनमोल खजाने की तरह अपने दिल में रखता है. अपने भाई-बहनों में सबसे बड़ा होने के कारण वह उन्हें बहुत प्रेम करता है. इस बीच ज्योतिमा अपने गांव में एक घर बनाकर व अपने बच्चों को पढ़ाकर अपनी जिंदगी का नया अध्याय शुरू कर रही है. अकबर अपने मां के प्रयासों को पूरी तरह से समझता है और वह अपने परिवार के बेहतर भविष्य के लिए अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर रहा है. अकबर को उसका लक्ष्य पता है, वह औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) से पढ़कर तकनीकी कौशल हासिल करना चाहता है. वह कहता है कि उसके गांव में कोई भी ऑटो तकनीशियन नहीं है और वह आईटीआई से कौशल सीखकर अपने गांव वालों की मदद करना चाहता है. इसके साथ ही वह अपने डांस की कला को भी निखार कर अपने भाई बहनों के लिए एक प्रेरणास्त्रोत बनना चाहता है.

नोट : गोपनीयता बनाए रखने के लिए इस लेख में असल नामों के स्थान पर काल्पनिक नामों का इस्तेमाल किया गया है.